विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 7 अंक: 25 मार्च 2014

विश्व हिंदी दिवस 2014

विश्व हिंदी सचिवालय ने 10 जनवरी 2014 को मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग उपस्थित हुए। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में जापान से आए प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ द्वारा बीज वक्तव्य, सचिवालय की वार्षिक पत्रिका का लोकार्पण, अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा तथा श्री शेखर सेन द्वारा 'विवेकानंद' पर एकपात्रीय नाटक की प्रस्तुति विशेष रहे।

शेष पृ. 2-3

विश्व हिंदी दिवस 2014: विश्वभर में

विश्व हिंदी दिवस साल-दर-साल अधिक से अधिक देशों में प्रचलित होता जा रहा है। विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में भारत, चीन, बहरीन, नेपाल, कनाडा, जर्मनी, श्रीलंका, दोहा, मास्को, बेलारूस, मेक्सिको, तोक्यो आदि अन्य अनेक देशों में आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह की रिपोर्ट इस अंक में प्रस्तुत हैं।

शेष पृ. 4-5-6

आधिकारिक कार्यारंभ की 6ठी वर्षगांठ

11 फ़रवरी, 2014 को विश्व हिंदी सचिवालय ने मॉरीशस के शिक्षा मंत्री व भारतीय उच्चायुक्त की उपस्थिति में अपने कार्यारंभ दिवस की 6ठी वर्षगांठ मनाई। भारत के प्रसिद्ध लेखक श्री उदय प्रकाश का बीज वक्तव्य हुआ। लेखक के सान्निध्य में विभिन्न पाठशालाओं तथा संस्थाओं में शैक्षिक सत्रों का आयोजन भी किया गया।

शेष पृ. 7

सिओल में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

दक्षिण कोरिया के हान्कुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ ने विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय दूतावास, सिओल के सहयोग से 13 से 15 मार्च तक अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया। उद्देश्य था ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, भारत और कोरिया समेत समस्त एशिया प्रशान्त क्षेत्र में हिंदी के शिक्षण और अध्यापन को बढ़ावा देना।

शेष पृ. 8

श्रद्धांजलि: श्री अमरकांत तथा श्री पूजानंद नेमा

हिंदी के अग्रणी साहित्यकार श्री अमरकांत का 17 फरवरी 2014 को इलाहाबाद में निधन हो गया। श्री अमरकांत ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू और व्यास सम्मान जैसे कई लब्धप्रतिष्ठ पुरस्कारों से सम्मानित थे।

मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी कवि व कथाकार श्री पूजानंद नेमा का 13 मार्च, 2014 को देहान्त हो गया। महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं के प्रकाशन में सह-संपादक के रूप में श्री नेमा का बहुत बड़ा योगदान रहा है व आपने उच्च कोटि की रचनाओं का प्रकाशन भी किया।

शेष पृ. 11

आगे पढ़ें :

- 'हाशिए उलांघती औरत' कहानी के पांच खंडों का लोकार्पण पृ. 8
- 21 वीं शती के साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी पृ. 9
- द्वितीय अंतरराष्ट्रीय विश्व भाषा हिंदी दिवस सम्मेलन पृ. 9
- हिंदी को विश्व भाषा बनाने में मीडिया की भूमिका पर व्याख्यान पृ. 10
- हिंदी की एकमात्र यहूदी उपन्यासकार सम्मानित पृ. 10

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी दिवसः 2014
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

विश्व हिंदी सचिवालय ने 10 जनवरी 2014 को मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया। मॉरीशस के फ़ेनिक्स स्थित इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में आयोजित समारोह की गरिमा बढ़ाने मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग उपस्थित हुए। इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों की सूची में शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी; कला व संस्कृति मंत्री, माननीय मुखेश्वर चुनी; कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अशोक कुमार; सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य, श्री अजामिल माताबदल व अन्य महानुभाव भी हैं।

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग

इस अवसर पर महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग ने मॉरीशस के इतिहास में गढ़े हिंदी के संघर्ष की बात करते हुए नई पीढ़ी को हिंदी के पठन-पाठन की ओर अग्रसर होने का प्रोत्साहन दिया - ''आपको अपने बच्चों को बताना होगा कि उनकी हिंदी ने इस देश का कितना मान बढ़ाया है... तब जाकर उनके मन में अपनी भाषा के लिए प्रेम बढ़ेगा।''

हिंदी की समृद्धि को रेखांकित करते हुए महामहिम जी कहते हैं: ''जो हिंदी नई प्रौद्योगिकी के साथ जुड़ी हुई एक आधुनिक भाषा बन रही है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भाषा बन रही है... वही हिंदी अपने साहित्य में अपने शब्दों में अपने इतिहास में हमारी संस्कृति के मूल्य भी लिए हुए हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास ऐसी भाषा है जो परंपराओं के साथ-साथ नएपन को भी जोड़ सकती है।''

शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, डॉ. वसंत कुमार बनवारी

माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी ने विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यों तथा गतिविधियों व आयोजनों की सराहना करते हुए शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के सहयोग का विश्वास दिलाया। माननीय मंत्री जी ने मॉरीशस में शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए प्रौद्योगिकी की बात की जिसमें उन्हें सचिवालय तथा शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के संयुक्त प्रयासों का उल्लेख किया। वे कहते हैं: ''हमारी सरकार चाहती है कि देश में सभी विषय के शिक्षण को आधुनिक बनाया जाए और मुझे खुशी है कि जहाँ तक हिंदी भाषा का सवाल है, मंत्रालय और सचिवालय एक साथ मिलकर उसके भविष्य का रास्ता दिखा रहे हैं।''

कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अशोक कुमार

कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अशोक कुमार ने विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में भारत के महामहिम प्रधान मंत्री का संदेश पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात महामहिम ने अपने उद्गार में सचिवालय की गतिविधियों व योजनाओं में भारत सरकार के निरंतर सहयोग का विश्वास दिलाया।

अतिथि वक्ता, प्रो. ताकेशि फुजिइ

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सचिवालय के आमंत्रण पर तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑव फ़ॉरेन स्टडीज़, जापान से आए प्रो. ताकेशि फुजिइ का बीज वक्तव्य ''जापान में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन-अध्यापन: इतिहास, उपलब्धियाँ व स्मृतियाँ'' पर आधारित रहा जिसे समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों ने खूब सराहा।

समारोह के आरंभ में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने विशेष रूप से 2013 की उपलब्धियों का ब्योरा दिया तथा 2014 की योजनाएँ प्रस्तुत कीं। श्री सुखलाल ने विशेष रूप से सचिवालय की इस गतिविधि के लिए सभी सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार प्रकट किया तथा सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता के विजेताओं की भी घोषणा की।

पुरस्कार वितरण: भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता

समारोह के दौरान हिंदी दिवस 2013 के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित निबंध व काव्य-पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। यह पुरस्कार विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रायोजित किया गया तथा उपस्थित महानुभावों द्वारा भेंट किया गया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता

सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता के मॉरीशसीय विजेता तथा भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित निबंध व काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेता

विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2013 में पांच भौगोलिक क्षेत्रों 1. अफ़्रीका व मध्य पूर्व, 2. अमेरिका, 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), 4. युरोप, 5. भारत के लिए एक 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता' का आयोजन किया था जिसके विजेताओं की घोषणा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यवाहक महासचिव द्वारा की गई। समारोह में अफ़्रीका व मध्य पूर्व क्षेत्र के तीन मॉरीशसीय विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

लोकार्पण: विश्व हिंदी पत्रिका का 5वां अंक

विश्व हिंदी पत्रिका का लोकार्पण

सचिवालय ने अपनी वार्षिक पत्रिका के पांचवे अंक के मुद्रित व वेब प्रारूपों का लोकार्पण किया। इस अंक में विभिन्न देशों से प्राप्त 41 लेख प्रस्तुत किए गए हैं। इस वर्ष की पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि यह पत्रिका प्रसिद्ध, वरिष्ठ, स्थापित मॉरीशसीय साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत को समर्पित की गई तथा विशेष भाग हिंदी तथा सूचना-संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित है। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर भी उपलब्ध है।

श्री शेखर सेन द्वारा स्वामी विवेकानंद के जीवन पर एकपात्रीय नाटक का मंचन

इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस की अलग विशेषता रही, उसका सांस्कृतिक कार्यक्रम। इस बार विश्व हिंदी दिवस के अतिथियों को प्रसिद्ध भारतीय नाटककार व अभिनेता, श्री शेखर सेन द्वारा स्वामी विवेकानंद के जीवन पर एकपात्रीय नाटक देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

प्रसिद्ध भारतीय कलाकार, श्री शेखर सेन

विवेकानन्द नाटक भारत और विदेश में दो सौ से अधिक प्रस्तुतियों के बाद मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों के लिए मंचित हुआ। कहानी है 150 वर्ष पूर्व जन्मे उस महान विद्रोही संत के जीवन की जिन्होंने स्वामी कृष्णानन्द से भेंट के बाद भारतीय दर्शन को विश्व भर में फैलाया और शिकागो के अपने ऐतिहासिक भाषण से लेकर आज तक, आज भी भारतीय मनीषा व दर्शन के प्रतीक रूप में पहचाने जाते हैं।

मॉरीशस की जनता को पहली बार श्री शेखर सेन जैसे उच्च कोटि के कलाकार की कला का तथा विवेकानंद जी के जीवन की गाथा का रसास्वादन करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री शेखर सेन गायक, संगीतकार, कवि और कथाकार भी हैं।

समारोह में उपस्थित महानुभाव व गणमान्य अतिथि

श्री चेतनदेव भगन, कला व संस्कृति मंत्रालय के स्थायी सचिव; श्री शांतनु मुखर्जी, मॉरीशस के प्रधान मंत्री के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार; श्री बिजय मधु, महात्मा गांधी संस्थान के निदेशक; श्री संजय शर्मा, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक; श्री मजुमदार, अजंता फ़ार्मा के निदेशक; श्री मीमांसक, भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा); सुश्री अनुपमा चमन, कला व संस्कृति मंत्रालय की प्रमुख संस्कृति अधिकारी; हिंदी संगठन, हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा मॉरीशस, मॉरीशस सनातन धर्म पुरोहित मंडल, हिंदी लेखक संघ आदि धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा भाषा प्रचारक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य; मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी सहित्यकारों व हिंदी छात्रों तथा आम जनता ने अपनी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई।

मंच संचालन श्री विनय गुदारी तथा श्री अरविंद बिसेसर ने किया।

अन्य गतिविधियाँ

बाएँ से श्री शेखर सेन, प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ व मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आए हुए सचिवालय के अतिथि प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ तथा श्री शेखर सेन ने मॉरीशस के कई प्रख्यात महानुभावों से भेंट की तथा

हिंदी स्पीकिंग यूनियन द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि

मॉरीशस के अन्य हिंदी प्रचारक संस्थाओं के दर्शन किए। 9 जनवरी, 2014 को दोनों विद्वानों ने मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग; शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, डॉ. वसंत कुमार बनवारी तथा कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त, श्री अशोक कुमार के साथ औपचारिक भेंट की।

8 जनवरी, 2014 को महात्मा गांधी संस्थान के सभागार में कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में तथा विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग से हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ तथा श्री शेखर सेन के सम्मान में एक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया। दोनों विशेष अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने उन्हें संपूर्ण मॉरीशसीय हिंदी समाज के अतिथि का दर्जा दिया तथा विश्व हिंदी दिवस के भव्य आयोजन में अमूल्य योगदान प्रदान किया। हिंदी स्पीकिंग यूनियन के 'ज्ञान सरोवर' रेडियो कार्यक्रम द्वारा प्रो. फ़ुजिइ ने मॉरीशसीय हिंदी समाज के साथ अपना अनुभव बाँटा। श्री शेखर सेन के साथ दो कार्यक्रमों का टेपांकन किया गया जिससे मॉरिशसीय जनता लाभान्वित हुई।

बाएँ से श्री अभिमन्यु अनत, श्री शेखर सेन तथा प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ

11 जनवरी को प्रो. फ़ुजिइ तथा श्री सेन ने मॉरीशस के वरिष्ठ, प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत से भेंट की। इसी दिन हिंदी प्रचारिणी सभा ने दोनों अतिथियों के लिए सभा में ही एक विशेष भेंट का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रो. फ़ुजिइ तथा श्री शेखर सेन हिंदी प्रचारिणी सभा के वर्तमान कार्यकारिणी समिति के सदस्यों, सभा के अधिकारियों, सदस्यों व शिक्षकों से मिले। सभा के प्रधान ने हिंदी प्रचारिणी सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए उनकी गतिविधियों का भी ब्योरा दिया जिससे दोनों अतिथियों को मॉरीशस में हिंदी के क्षेत्र में हो रहे ठोस कार्यों तथा संस्थाओं के संघर्ष की झलक मिल पाई।

हिंदी प्रचारिणी सभा के अधिकारीगण व सदस्यों के साथ श्री सेन व प्रो. फ़ुजिइ

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2014: विश्वभर में

हिंदी की विशेष व ऐतिहासिक दिवस, सन् 1975 में 10 जनवरी को नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में तथा विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विश्व के कोने-कोने में विश्व हिंदी दिवस एक उत्सव के रूप में मनाया जाने लगा है। यह दिवस साल-दर-साल अधिक से अधिक देशों में प्रचलित होता जा रहा है। वर्ष 2014 का विश्व हिंदी दिवस भी विशेष रहा। भारत, चीन, बहरीन, नेपाल, कनाडा, जर्मनी, श्रीलंका, दोहा, मास्को, बेलारूस, मेक्सिको, तोक्यो आदि अन्य देशों में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया।

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि श्री नवतेज सरना

भारत

नई दिल्ली - भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा 10 जनवरी, 2014 को भारतीय विदेश सेवा संस्थान के प्रांगण में 'विश्व हिंदी दिवस' का भव्य आयोजन किया गया। माननीय विशेष सचिव (विदेश मंत्रालय) श्री नवतेज सरना इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि तथा शीन, भारतीय विदेश सेवा संस्थान द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। निदेश (प्रशा.) श्री राजेश वैष्णव द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। संयुक्त सचिव (प्रशा.) श्री संतोष झा द्वारा इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के संदेश का वाचन किया गया। मुख्य अतिथि ने विश्व हिंदी के बृहत स्तर पर आयोजन की सराहना की और साथ ही विदेशों में अपने कार्यकाल के दौरान हिंदी के प्रति बढ़ती रुचि का हवाला दिया। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व हिंदी दिवस मात्र एक दिवसीय आयोजन नहीं है बल्कि इस दिशा में हमें दिन-प्रतिदिन निरंतर प्रयासरत रहने की ज़रुरत है।

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान ने इस अवसर पर संबोधित करते हुए विदेश मंत्रालय को बधाई दी और साथ ही विदेशी छात्रों की भी उनकी बेहतरीन प्रस्तुति के लिए सराहना की।

समारोह में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमी, हिंदी विद्वान / पत्रकार, साहित्यकार, मीडियाकर्मी, मंत्रालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण एवं उपस्थित अतिथियों ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं दिल्ली में अध्ययनरत, चीन, कोरिया, जापान, श्रीलंका, इंडोनेशिया, विएतनाम, मंगोलिया, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, कजाकिस्तान आदि देशों से हिंदी सीखने आए छात्रों द्वारा स्वागत गीत, कथक नृत्य, हिंदी भाषा गीत, सोलो तबला वादन, समूह गीत एवं रास डांडिया की प्रस्तुति, इनमें से कुछ छात्रों द्वारा हिंदी में लघु भाषण, भारत में उनके अनुभव पर टिप्पणी, भारतीय संस्कृति के प्रति उनके सम्मान पर मधुर आवाज़ में टिप्पणी से भाव विभोर होकर सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लुत्फ उठाया और करतल ध्वनि से उनका मनोबल बढ़ाया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में हिंदी सीखने वाले विदेशी छात्रों के लिए एक 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' आयोजित की गई थी। 20 सफल प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय व प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर लघु काव्य पाठ का आयोजन भी किया गया जिसके दौरान जाने-माने प्रो. श्री अशोक चक्रधर, युवा हास्यकवि डॉ. प्रवीण शुक्ला, कवयित्री एवं ग़ज़ल गायिका श्रीमती ममता किरण ने अपनी कविताओं से समा बाँध दिया जिसका दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया। इस पूरे कार्यक्रम का उप सचिव (हिंदी) श्रीमती सुनीति शर्मा ने बखूबी संचालन किया।

सुनीति शर्मा की रिपोर्ट

मुम्बई - बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा 10 जनवरी 2014 को कॉरपोरेट कार्यालय, मुम्बई में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि लंदन से पधारी यू.के. हिंदी समिती की उपाध्यक्ष एवं प्रख्यात हिंदी लेखिका श्रीमती ऊषा राजे सक्सेना थीं। उन्होंने विदेशों, खासकर इंग्लैंड में हिंदी की स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं और कहा कि इंग्लैंड में हिंदी की स्थिति लगातार बेहतर हो रही है और वहाँ 150 से ज़्यादा एसोसिएशनों के माध्यम से हिंदी का प्रचार हो रहा है। यह विश्वमंच पर भारत की मज़बूत स्थिति के कारण भी संभव हो पाया है।

जनसम्पर्क विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, मुम्बई।

जामिया मिलिया इस्लामिया - 10 जनवरी, 2014 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर पंजीकरण कार्यालय का हिंदी प्रकोष्ठ, जामिया मिलिया इस्लामिया ने एक व्याख्यान एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया था। संकाय सदस्य, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यकाम ने 'वर्तमान परिषद् में हिंदी की चुनौतियाँ और संभावनाएँ' पर बात की।

मीडिया समन्वयक, जामिया मिलिया इस्लामिया

एनटीपीसी - भारत की एक महारत्न कंपनी एनटीपीसी लिमिटेड के पश्चिमी क्षेत्र मुख्यालय, रायपुर में 10 जनवरी, 2014 को विश्व हिंदी

दिवस पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि एनटीपीसी पश्चिमी क्षेत्र के कार्यकारी निदेशक श्री एस. एन. गांगुली ने निगम के अपर महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को उनके हिंदी साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित किया ।डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने अबतक 68 ओड़िया पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद करके हिंदी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की है। डॉ. मिश्र को वर्ष 1998 में साहित्य अकादमी के हिंदी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। डॉ. मिश्र विश्व हिंदी सचिवालय में उप महासचिव व महासचिव के पद पर कार्य कर चुके हैं। उन्हें जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में हुए नवें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए ''विश्व हिंदी सम्मान'' से भी सम्मानित किया गया था।

श्रीनिवास शर्मा की रिपोर्ट

उज्जैन - हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं भारतीय सद्भाव परिषद द्वारा 10 जनवरी, 2014 को विश्व हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। फाजलपुरा स्थित संत सांदीपनि हाईस्कूल के विद्यार्थियों द्वारा रैली निकाली गई। साथ ही आर्य समाज मंदिर सभागृह में विश्व पटल पर हिंदी विषय पर विद्वानों की परिचर्चा हुई। साहित्यकार डॉ. शिव शर्मा व डॉ. हरिमोहन बुधौलिया वरिष्ठ अतिथि

http://www.bhaskar.com

भुटान

10 जनवरी को नेहरू वांगचुक सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र के सदस्यों व थिम्फू भारतीय दूतावास के अधिकारियों ने कविता पठन किया, चुटकुले सुनाए तथा हिंदी के गाने गाए।

Nehru-Wangchuck cultural Centre

नेपाल

भारतीय दूतावास, काठमांडू ने हिमानी स्थित नेपाल अकादमी और लोक पत्रिकाओं के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर कामालदी स्थित नेपाल अकादमी में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में दोनों देशों के प्रख्यात विद्वानों ने विभिन्न भाषाओं और बोलियों को बढ़ावा देने और उनकी संरक्षण की आवश्यकता पर अपने विचारों को साझा किया। प्रख्यात भारतीय प्रौद्योगिकी कार्यकर्ता, बालेंदु शर्मा दाधिच ने समाज में प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग पर बात की। भारत और नेपाल के तीस प्रतिष्ठित कवियों ने कविता पठन से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

https://www.ekantipur.com

श्रीलंका

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो ने 4 जनवरी को एक तीन-स्तरीय निबंध-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया था जिसमें 80 से ज़्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया। 10 जनवरी, 2014 को विश्व हिंदी दिवस मनाने हेतु एक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए छात्रों को सम्मानित किया गया। हिंदी प्रचार-प्रसार से जुड़े अनेक श्रीलंकन संस्थाओं के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। तत्पश्चात भारतीय उच्चायोग, कोलंबो से पधारे विशिष्ट अतिथि श्रीमती एषा श्रीवास्तव, प्रथम सचिव (प्रेस & सूचना) एवं श्री गौरव आह्लुवालिया, प्रथम सचिव (राजनैतिक) ने प्रमाण-पत्र वितरित किए। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों ने अपने निष्पादन से समारोह की शोभा बढ़ाई।

8 जनवरी, 2014 को हिंदी संस्थान, कुरुणेगला में भी भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। छात्रों ने बड़े उत्साह और जोश से हिंदी का जश्न मनाया।

http://www.hcicolombo.org
https://www.facebook.com/HindiSansthanKurunegala

चीन

ग्वांगझोउ के वाणिज्यदूतावास में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। गुआंगदोंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के हिंदी विभाग के छात्रों ने इस समारोह में भाग लिया। प्रतिभागियों ने इस अवसर पर हिंदी कविता पठन, वक्तव्य तथा नृत्य में भाग लिया। विश्वविद्यालय की हिंदी प्राध्यापिका, सुश्री टिअन केपिंग ने हिंदी भाषा के महत्व तथा चीन में इसके बढ़ते वर्चस्व पर चर्चा की। भारतीय संस्कृति संबंध परिषद् के चेएर तथा वर्तमान में विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई।

http://cgiguangzhou.gov.in/news

बहरीन

बहरीन भारतीय पाठशाला द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह में लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया। एस. आर. के. कॉलेज के अनुसंधान व स्नातकोत्तर विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. राम सनेहीलाल शर्मा समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अंतर्गत प्रहसन, शास्त्रीय नृत्य व गायन आदि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

http://www.gulf-daily-news.com

कनाडा

5 जनवरी 2014 को कड़ाड़े ठंड और बर्फ़ानी तूफ़ान के बावजुद ग्रेटर टोरंटो एरिया, कनाडा में 8 हिंदी सहयोगी संगठन तथा हिंदी साहित्य सभा-टोरंटो, पैनोरमा इंदिया (सी.जी.आइ-टोरंटो के संरक्षण के तहत), हिंदी राइटर्स गिल्ड, अखिल विश्व हिंदी समिति, संस्कृत योग सभा, बैम्पटन के होप अव सीन्यर सिटिज़न ग्रूप, उत्तरी अमेरिका के राजस्थान एसोसिएशन और नारायण सेवा संस्थान कनाडा के आर्थिक सहयोग से हिंदी प्रेमियों ने बड़े धूम-धाम से विश्व हिंदी दिवस मनाया।

इस अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया जिसमें 25 प्रसिद्ध कविगण ने अपने देशभक्तिपूर्ण कविताओं से सब को आनंदित किया। श्री अखिलेश मिश्रा, भारत के महावाणिज्य ने सभा को संबोधित करते हुए मातृ भाषा, हिंदी के प्रति अपने प्रेम को दर्शाया और साथ ही इसके महत्व पर भी बल दिया।

डॉ. के. सी. भटनागर की रिपोर्ट

जर्मनी

10 जनवरी, 2014 को हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। 70 से अधिक लोगों ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। निबंध-लेखन प्रतियोगिता के अलावा, हिंदी-कविता पठन, हिंदी गाने, भारतीय नृत्य एवं संगीत तथा हिंदी भाषा, साहित्य, भारतीय संस्कृति व समाज, इतिहास, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, भूगोल तथा भारतीय विद्या पर रोचक प्रश्नोत्तरी हुईं। अध्यापकों और छात्रों ने सोहनलाल द्विवेदी, निराला, दुष्यंत कुमार, अयोद्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', रामधारी सिंह दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य शिवप्रकाश अवस्थि, नागार्जुन, सरोज उप्रेती, शंभुनाथ सिंह, काका हाथरसी और मोहन राणा की कविताएँ पढ़ीं। विश्व हिंदी दिवस 2014 का कार्यक्रम, श्री मुकेश कुमार अंबास्ता एवं श्री दलवीर सिंह, हैम्बर्ग में वाणिज्य दूतावास, विश्वविद्यालय के छात्र व अध्यापकगण तथा मैक्स-प्लैक संस्थान के भारतीय विद्वानों के सहयोग से अति सफल रहा।

http://hindieurope.blogspot.com

दोहा

एम.ई.एस इंडियन स्कूल ने भिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रस्तुतियों द्वारा बड़े धूम-धाम से विश्व हिंदी दिवस मनाया। इस अवसर पर सभी अनुभागों से लगभग 150 छात्रों ने उत्साहपूर्वक विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस उत्सव ने हिंदी-उत्थान का मंच प्रदान किया। यह हिंदी भाषा की प्रासंगिकता और अन्य भाषाओं के बीच इसकी समृद्ध परंपरा एवं अद्वितीय अस्तित्व को उजागर करने हेतु था। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ छात्रों द्वारा प्रस्तुत कविता व भाषण समस्त पाठशाला के लिए अत्यंत समृद्ध अनुभव सिद्ध हुआ। प्रधानाचार्य शशिधरन एपी ने अपने संबोधन में कहा कि अपने क्षत्रीय भाषाओं एवं मातृभाषा की सुरक्षा हेतु, हमें संयुक्त रूप से वैश्विक भाषाओं में हिंदी को एक गौरवपूर्ण स्थान देने का प्रयत्न करना चाहिए।

http://www.qatar-tribune.com

मास्को

विश्व हिंदी दिवस समारोह 31 जनवरी, 2014 को भारत के दूतावास, मास्को में आयोजित किया गया। महामहिम श्री पी.एस. राघवन, रूसी महासंघ में भारत के राजदूत एवं श्रीमती बारबरा राघवन समारोह के सम्मानित अतिथि रहे। महामहिम श्रीमती इंदिरा सावित्री थाकुर-सिदाया, रूसी संघ में मॉरीशस के राजदूत तथा डॉ. सफर्मो तोलिबी, स्कूल नं. 19, मास्को में हिंदी शिक्षक पधारे हुए अतिथियों में से थे। श्री राघवन ने अपने भाषण में यह उल्लेख किया कि रूसी के सभी प्रमुख संस्थानों में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है तथा दूतावास की ओर से रूस में हिंदी के प्रचार में सहयोग देने का वादा किया। जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र (JNCC), स्कूल नं. 19, मास्को एवं अन्य छात्रों ने हिंदी शिक्षक, डॉ. गुलाब सिंह के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक कार्यक्रम यथा हिंदी भाषा में कविताएँ, प्रहसन, गाने आदि प्रस्तुत किए। श्री राघवन ने प्रतिभागियों को उपहार भेंट किए और कार्यक्रम दूतावास द्वारा आयोजित स्वागत समारोह से संपन्न हुआ।

भारतीय राजदूतावास, मास्को

बेलारूस

10 जनवरी, 2014 को भारतीय दूतावास, मिंस्क के परिसर में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। महामहिम श्री मनोज के. भारती, बेलारूस में भारत-राजदूत ने भारतीय प्रधानमंत्री की ओर से शुभकामनाओं का एक विशेष संदेश पढ़ते हुए सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने बेलारूस में हिंदी भाषा के प्रचार में दूतावास में हिंदी कक्षाएँ चला रहे हिंदी अध्यापकों और प्रो. मीहैलव के योगदान को अभिस्वीकृत किया।

भारतीय राजदूतावास, मिंस्क

मेक्सिको

12 फ़रवरी, 2014 को गुरुदेव टैगोर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दूतावास के सभागार में एक प्रतीकात्मक समारोह का आयोजन किया। 20 से अधिक हिंदी-संस्कृत के छात्रगण एवं मेक्सिको के अन्य हिंदी-उत्साहियों ने समारोह में भाग लिया। समारोह महामहिम श्री सुजान ऑर. चिनॉय, मेक्सिको में भारत के राजदूत के संबोधन भाषण से आरंभ हुआ जिसमें उन्होंने हिंदी के प्रयोग व प्रचार पर बल दिया। राजदूत ने विशेषत: यह उल्लेख किया कि हिंदी ने भारतीय क्षितिज से शुरु होकर अब अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त कर ली है। हिंदी कक्षा के छात्रों द्वारा तैयार एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम से कार्यक्रमों का दौड़ आरंभ हुआ। विश्व हिंदी दिवस पर एक प्रभावशाली प्रस्तुति हुई, हिंदी भाषा में संवाद हुए, तीन साल से हिंदी पढ़ रहे छात्रों ने हरिवंशराय बच्चन व जावेद अख़तर की कविताओं पर अपनी प्रतिभां का प्रदर्शन किया, अफ्रीका के लघुकथा पर एक मंचन हुआ। दर्शकों ने इस दिलचस्प व रंगीन प्रस्तुति की सराहना की।

http://www.indembassy.org

तोक्यो

14 फ़रवरी, 2014 को तोक्यो में भारतीय संस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया। जापान में भारतीय राजदूत, महामहिम श्रीमती दीपा गोपालन वाधवा के उद्बोधन से समारोह का श्रीगणेश हुआ। जापान में हिंदी के प्रचार-प्रसार व उन्नयन के लिए महामहिम वाधवा जी ने जापान के शिक्षकों, विद्वानों व प्राध्यापकों के प्रति आभार प्रकट किया।

महामहिम जी के अनुसार जापान में हिंदी के बढ़ते वर्चस्व को देखते हुए इस भाषा के प्रचार में अपना सहयोग देते हुए भारतीय दूतावास ने हिंदी दिवस का आयोजन किया। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की गतिविधियों की सराहना करते हुए महामहिम ने भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उपलब्ध छात्रवृत्ति की सुविधा की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया।

इस अवसर पर महामहिम वाधवा ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारत के प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहनसिंह का संदेश पढ़कर सुनाया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी में वक्तव्य, परिचर्चा तथा कविता पठन का आयोजन भी किया गया। जापान के कई हिंदी प्रेमियों, हिंदी विद्वानों व छात्रों ने इस गतिविधि में रुचि के साथ भाग लिया। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी की पढ़ाई करने वाले छात्रों ने हिंदी में कविताएँ सुनाईं और गाने भी गाये। कार्यक्रम में जापान के प्रसिद्ध हिंदी विद्वान तथा तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के प्रो. ताकेशि फुजिइ ने वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने हिंदी पर अपने नए अनुसंधान के बारे में चर्चा की। जापान के एक अन्य हिंदी विद्वान डॉ. योशियो ताकाकुरा ने भारत में प्राप्त अपने अनुभवों को साझा किया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गतिविधियों में भाग लेने वाले सभी प्रआतिभागियों को महामहिम वाधवा जी के हाथों पुरस्कार व स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

भारतीय राजदूतावास, तोक्यो

विश्व हिंदी सचिवालय का आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

सभागार को संबोधित करते हुए श्री उदय प्रकाश

श्री उदय प्रकाश

11 फ़रवरी, 2014 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग के सौजन्य से अपने कार्यारंभ दिवस की 6ठी वर्षगांठ मनाई। समारोह का आयोजन महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में हुआ। इस अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. वसन्त कुमार बनवारी ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की गरिमा बढ़ाई तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल भी समारोह में उपस्थित थे।

प्रति वर्ष सचिवालय अपने कार्यारंभ दिवस के अवसर पर भारत से एक सुप्रसिद्ध विद्वान को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित करता है। इस वर्ष सचिवालय ने विशेष रूप से प्रख्यात हिंदी लेखक, पटकथाकार, निर्देशक, प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार के विजेता श्री उदय प्रकाश को आमंत्रित किया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय कुमार मधु, विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल भी उपस्थित रहे।

विशेष अतिथियों का पुष्प गुच्छ के साथ स्वागत किया गया। समारोह का श्रीगणेश महात्मा गांधी संस्थान के स्कूल फ़ॉर पर्फोमिंग आर्ट्स, सेंटर फ़ॉर पर्फोमिंग आर्ट्स की कलाकार श्रीमती ललिता गोपी द्वारा मधुर आवाज़ में सरस्वती वन्दना से हुआ।

सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने सभागार में उपस्थित महानुभावों, गण्मान्य अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों का स्वागत करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना, उसके उद्देश्य, कार्यक्रम एवं गतिविधियों तथा भावी योजनाओं का एक संक्षिप्त परिचय दिया। साथ ही एक वीडियो प्रस्तुति द्वारा वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आमंत्रित अतिथि वक्ता श्री उदय प्रकाश के पूरे जीवन, उनके अनुभव व कार्य, उनकी रचनाओं व फ़िल्मों आदि का एक मनोरम परिचय दिया। प्रस्तुति में उनके फ़िल्म 'मोहनदास' का एक अंश भी चलाया गया।

दाएँ से श्री बिजय मधु, श्री उदय प्रकाश, माननीय
डॉ. वसंत कुमार बनवारी तथा महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल

महामहिम भारतीय उच्चायुक्त, श्री अनूप कुमार मुद्गल ने सचिवालय की वर्षगांठ के लिए बधाई दी। महामहिम श्री मुद्गल ने हाल ही में मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त का पद ग्रहण किया। महामहिम जी ने सचिवालय की गतिविधियों की सराहना करते हुए अपने तथा भारतीय उच्चायोग कए निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री उदय प्रकाश ने ''वर्तमान हिंदी साहित्य : प्रवृत्तियाँ व दिशाएँ'' पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री उदय प्रकाश ने हिंदी साहित्य की चर्चा करते हुए अपनी रचनाओं के साथ-साथ उन रचनाओं पर बनी फ़िल्मों का भी उल्लेख किया। उन्होंने साहित्यिक रचना पर फ़िल्म निर्माण तथा पटकथा लेखन की प्रक्रिया, उसके नियम, समस्याओं आदि पर भी विस्तार दिया।

समारोह में उपस्थित मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों ने श्री उदय प्रकाश के साथ भेंट कर हर्ष व्यक्त किया तथा अपनी रचानाएँ भी भेंट की। सचिवालय श्री उदय प्रकाश के प्रति आभार स्वरूप एक भेंट प्रस्तुत किया।

समारोह में शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के प्रधान सहायक सचिव, श्री मेधा गणपत; भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मीमांसक; हिंदी संगठन के प्रधान, श्री राजनारायण गति; महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका, श्रीमती कुंजल; मॉरीशस के अनेक वरिष्ठ साहित्यकार; महात्मा गांधी संस्थान के प्राध्यापक व छात्र गण तथा मॉरीशस की शैक्षणिक, भाषा प्रचारक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य भी उपस्थित रहे।

श्री उदय प्रकाश एक प्रसिद्ध कवि, कथाकार, पत्रकार व फ़िल्मकार हैं। उनकी रचनाएँ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। कुछ कृतियों के अंग्रेज़ी, जर्मन, जापानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में इनकी रचनाएँ अनूदित हैं। इनकी कई कहानियों का सफल मंचन हो चुका है। 'उपरान्त' तथा 'मोहनदास' कहानियों पर फीचर फ़िल्में भी बन चुकी हैं। श्री उदय प्रकाश कई टी.वी. धारावाहिकों के निर्देशक-पटकथाकार भी रहे हैं।

श्री उदय प्रकाश के साथ मॉरीशस के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार

अन्य गतिविधियाँ

श्री उदय प्रकाश जैसे उच्च कोटि के विद्वान के सान्निध्य में में साहित्य तथा सिनेमा की दुनिया तथा उसके संघर्ष के बारे में सीखने के अवसर का लाभ उठाते हुए सचिवालय ने अपनी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में श्री उदय प्रकाश के संचालन में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया।

10 फरवरी, 2014 को क्यूर्पिप स्थित हिंदू गर्ल्स कॉलेज तथा 14 फरवरी, 2014 को इलो स्थित रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान में हिंदी छात्रों के लिए एक 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मिलन से छात्रों को साहित्यकार होने के दायित्व, साहित्य रचना की प्रक्रिया तथा प्रतिभा, साहित्यकार के अनुभव, हिंदी रचना संसार तथा सिनेमा व पटकथा लेखन आदि के बारे में जानकारी मिली।

12 फरवरी, 2014 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में 'सृजनात्मक लेखन से पटकथा लेखन तक' पर आधारित एक-दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मॉरिशस के हिंदी विद्वान, हिंदी शिक्षकों, प्राध्यापकों व छात्रों तथा फ़िल्म निर्माण में रुचि रखने वालों ने बड़ी उत्साह से भाग लिया।

15 फरवरी, 2014 को श्री उदय प्रकाश के सान्निध्य पाय स्थित डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के शिक्षकों व छात्रों के लिए एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान कॉलेज के शिक्षकों तथा छात्रों के लिए अत्यन्त रुचिकर व लाभकारी रहा।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सिओल में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

दक्षिण कोरिया के हान्कुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ ने विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय दूतावास, सिओल के सहयोग से 13 से 15 मार्च तक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, भारत और कोरिया समेत समस्त एशिया प्रशान्त क्षेत्र में हिंदी भाषा के शिक्षण और अध्यापन को बढ़ावा देना था। इस सम्मेलन में जापन, चीन, ऑस्ट्रेलिया, भारत और कोरिया से विशिष्ट प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का मुख्य विषय था ''21वीं शताब्दी में हिंदी शिक्षण : एशियाई पैसिफ़िक संदर्भ''। पांच अकादमिक सत्रों में कुल अठारह आलेख पढ़े गए।

13 मार्च, 2014 को सम्मेलन का उद्घाटन विश्वविद्यालय के ग्लोबल परिसर के सभागार में हुआ। स्वागत भाषण विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर किम इन छल ने दिया। उद्घाटन संबोधन दक्षिण कोरिया में भारत के राजदूत महामहिम श्री विष्णु प्रकाश जी ने दिया। हिंदी सेवी सम्मान प्राप्तकर्ता और विभाग के प्रोफ़ेसर एमेरिटस प्रो. लि जंग हो ने 'भारत और हिंदी की याद' शीर्षक स्मृति-चित्र प्रस्तुत किया।

पांच अकादमिक सत्रों में 'हिंदी शिक्षण : वैश्विक संदर्भ', 'हिंदी एवं उसका विकास', 'भारतीय ग्रंथ और अनुवाद', 'भूमंडलीकृत एवं डिजिटल युग के परिप्रेक्ष्य में हिंदी शिक्षण', 'हिंदी शिक्षार्थी: व्यवहार एवं अपेक्षाएँ' विषय पर विमर्श हुए। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता व संचालन हिंदी विभाग बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ से प्रो. आलोक राय, हिंदी विभाग हान्कुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ से प्रो. छाई जोंग छन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारत से प्रो. रामबक्ष, दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र पेकिंग विश्वविद्यालय से प्रो. जियाँग जिंग कुई, दाइताबुंका विश्वविद्यालय जापान से प्रोफ़ेसर हिदेआकी इशिदा ने किया। विभिन्न सत्रों में वक्ता थे: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति श्री विभूतिनारायण राय जिन्होंने 'ऑस्ट्रेलिया में हिंदी : अतीत, वर्तमान और भविष्य' शीर्षक अपने आलेख की पावर पोंइट प्रस्तुति दी। तीसरी वक्ता हान्कुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ोरेन स्टडीज़ से प्रो. विजया सती ने अपना आलेख 'बुदापैश्त में हिंदी अध्यापन : कुछ स्मृतियाँ' शीर्षक से प्रस्तुत किया। प्रो. किम ऊ जो, हान्कुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ोरेन स्टडीज़ का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। उन्होंने 'दक्षिण कोरिया में हिंदी शिक्षण : 40 वर्ष का सफ़र' शीर्षक अपने आलेख में कोरिया में हिंदी शिक्षण के विकास को विस्तार सहित प्रस्तुत किया।

चीन के शिआन इन्टरनेशनल स्टडीज़ विश्वविद्यालय से आए प्रो. गे. फुपिंग के आलेख का विषय था - 'भारतीय लोगों का सांस्कृतिक मनोविज्ञान और हिंदी व्यवहार की विशेषताएं ।' हान्कुक विश्वविद्यालय से डॉ. क्षिशतोफ इवानेक ने 'विद्या भारती स्कूलों में हिंदी भाषा अध्यापन' पर आलेख पढ़ा । हान्कुक विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से प्रो. हृदयनारायण के आलेख का शीर्षक था - 'हिंदी और राष्ट्रवाद' । हान्कुक विश्वविद्यालय से प्रो. लिम गन दोंग ने 'हिंदी शिक्षण में संस्कृत शिक्षा का योगदान', जापान के दाइताबुंका विश्वविद्यालय से प्रो. हिदेआकी इशिदा ने 'हिंदी शिक्षण में लोक कथाओं की उपयोगिता', दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी ने 'हिंदी साहित्य शिक्षण में तुलसीदास की उपयोगिता' और पेकिंग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. जियांग कुई ने 'भारतीय ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद' शीर्षक आलेख पढ़े ।

तोक्यो यूनीवर्सिटी ऑफ़ फोरेन स्टडीज़ के प्रो. ताकेशि फुजिइ ने 'डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन-अध्यापन' आलेख पढ़ा। हान्कुक विश्वविद्यालय के प्रो. ली उन गू ने 'हिंदी फ़िल्मों गीतों के माध्यम से हिंदी शिक्षण' विषय पर अपने विचार रखे। प्रो. रामबक्ष के आलेख का शीर्षक था 'भूमंडलीकरण और हिंदी का अध्ययन।' केंद्रीय हिंदी संस्थान भारत से प्रो. मोहन ने 'हिंदी सीखने वाले कोरियाई विद्यार्थियों का अधिगम-व्यवहार और अपेक्षाएं' शीर्षक से अपनी बात रखी। ओसाका विश्वविद्यालय जापान से प्रो. चिहिरो कोइसो ने 'हिंदी में पढ़ने वालों की अभिप्रेरणा कैसे बढ़नी चाहिए' विषय पर संवाद किया, बुसान विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से आए खो थे जीन ने 'कोरिया में हिंदी अध्यापन एक अनुभव' शीर्षक से वक्तव्य प्रस्तुत किया। ग्वांगदोंग विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय चीन से आए प्रो. हू रुई ने 'अभाव पूर्ति सिद्धांत' की दृष्टि से हिंदी शिक्षा पर कुछ विचार प्रस्तुत किए ।

सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता और संचालन हान्कुक विश्वविद्यालय से प्रो. किम ऊ जो ने किया, जिसमें सभी अकादमिक सत्रों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। समापन वक्तव्य उपसचिव, विदेश मंत्रालय, श्रीमती सुनीति शर्मा और भारतीय दूतावास सिओल के भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक निहारिका सिंह ने दिया ।

विजया सती, प्रो. हिंदी विभाग

'हाशिए उलांघती औरत' कहानी के पांच खंडों का लोकार्पण

वर्ष 2008 में रमणिका गुप्ता जी ने 'युद्धरत आम आदमी' के ''हाशिये उलांघती औरत'' विशेषांक की योजना का सूत्रपात किया था जिसके अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं की महिला रचनाकारों की स्त्रीविमर्श विषयक रचनाओं के संकलन की योजना बनाई गई। इस परियोजना के अंतर्गत 40 भाषाओं की स्त्री मुक्ति की कहानियों के हिंदी अनुवाद की श्रृंखला के हिंदी के तीन खण्डों के बाद 'हाशिए उलांघती औरत' के पांच खंडों तेलुगु, प्रवासी, पंजाबी, मराठी और गुजराती का लोकार्पण तथा संगोष्ठी का कार्यक्रम 28-29 मार्च 2014 को जे.एन.यू. में हुआ।

जे.एन.यू. के उपकुलपति प्रो. एस. के. सोपोरी, नया ज्ञानोदय के संपादक लीलाधर मंडलोई, राजेंद्र उपाध्याय तथा तेलुगु लेखिका जे. भाग्यलक्ष्मी के हाथों इन पांच भाषा खंडों एवं वासवी किडो की पुस्तक ''भारत की क्रांतिकारी आदिवासी वीरांगनाएँ'' तथा राजकुमार कुम्भज कविता संकलन 'दृश्य एक घर है' का लोकार्पण हुआ।

प्रो. सोपोरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''शायद ही पहले ऐसा हुआ हो कि एक साथ पांच-पांच भाषाओं के अलग-अलग खंडों का लोकार्पण हुआ हो। यह एक बहुत बड़ा काम है। उन्होंने खुद भी इस रमणिका फाउंडेशन के अभियान में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि रमणिका फाउंडेशन ने 40 भाषाओं की स्त्री मुक्ति पर आधारित कहानियों का अनुवाद हिंदी में करके इस विश्वास को सिद्ध किया है कि भाषाएँ जोड़ती हैं और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद कायम करती हैं। तेलुगु लेखिका भाग्यलक्ष्मी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह एक बहुत बड़ा काम है और बहुत गंभीर मुद्दा है। जिसे रमणिका फाउंडेशन ने उठाया है। उन्होंने कहा कि साहित्य 24 भाषाओं तक ही सीमित है और छिटपुट कुछ अन्य भाषाएँ लेती हैं। लेकिन रमणिका फाउंडेशन ने अपना दायरा 40 भाषाओं तक बढ़ाया है। इतने बड़े अनुवाद का कार्य फाउंडेशन ने किया है। फाउंडेशन की अध्यक्ष रमणिका गुप्ता ने इस पूरे श्रृंखला की योजना तथा संपादकीय अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि स्त्री-मुक्ति की अवधारणा और उसके इतिहास को लेकर एक विशेष शोधपरक कार्य है। उन्होंने कुलपति के समक्ष अंग्रेज़ों की खिलाफत की जिस वीर ...... को फांसी की सज़ा दी गई थी, के नाम पर जे.एन.यू. में प्रस्तावित पूर्वोत्तर भाषाओं के केंद्र का नामकरण करने का प्रस्ताव भी रखा। जिस पर कुलपति ने लिखित प्रस्ताव मांगा और इसपर विचार करने का आश्वासन दिया।''

यह कार्यक्रम तीन सत्रों में संपन्न हुआ। वाकी के दो सत्र 29 मार्च को हुए।

''हाशिये उलांघती औरत'' के पांच खण्डों में से प्रवासी खण्ड में सूषम बेदी, उर्मिला शिरीष, पूर्णिमा वर्मन, भावना सक्सेना, कविता वाचक्नवी आदि के साथ-साथ मॉरीशस की भानुमती नागदान जी की कहानी भी सम्मिलित है।

आभार : डॉ. कविता वाचक्नवी तथा भारत तिवारी,
मीडिया प्रभारी, रमणिका फाउंडेशन

प्रो. गिरीश्वर मिश्रा बने महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति

5 मार्च, 2014 को दिल्ली विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रो. गिरीश्वर मिश्रा ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति का पद ग्रहण किया। प्रो. मिश्रा एक प्रसिद्ध विद्वान व सफल लेखक तथा स्तंभलेखक भी हैं। आप 1993 से लेकर आज तक दिल्ली में शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत रहे। आप रिसर्च फ़ॉर ह्यूमानिटीज़ और सोशल साइंस के डीन भी रह चुके हैं। प्रो. मिश्रा नेशनल अकादमी ऑव साइकोलॉजी के प्रधान भी रह चुके हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से प्रो. गिरीश्वर मिश्रा जी को बधाई व हार्दिक शुभकामनाएँ।

दिल्ली विश्वविद्यालय के वेबसाइट से साभार

'अदम गोंडवी की कविता : जनरुचि और पठनीयता का संदर्भ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में 28 जनवरी 2014 को 'अदम की कविता : जनरुचि और पठनीयता का संदर्भ' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति नारायण रॉय ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात कवि एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह ने कहा "हिंदी और उर्दू भाषा के मिलाप से जनता की भाषा बन सकती है और हमें उसी को अपनाना चाहिए। कवि अदम गोंडवी ने अपनी कृतियों के माध्यम से नई भाषा देकर एक समृद्ध परंपरा की नींव डाली है।"

उद्घाटन समारोह में बीज वक्ता के रूप में केदारनाथ सिंह तथा दूधनाथ सिंह व उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के निदेशक सुधाकर अदीब, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल मंचासीन थे।

उदय प्रताप सिंह ने कहा कि मैं हिंदी और उर्दू के भेद को अस्वीकार करता हूँ। भविष्य में हिंदी का स्वरूप बदलेगा और वह विश्वपटल पर अपना प्रभाव डालेगी। अपने उद्घाटन वक्तव्य में केदारनाथ सिंह ने कहा कि गोंडा में शायरों की लंबी परंपरा रही है। यहाँ पर असगर गोंडवी और जिगर मुरादाबादी जैसे शायरों ने अपनी प्रतिभा बिखेरी। इस परिदृश्य में अदम ने परंपरा को बदलने का काम किया है। उन्होंने ग़ज़ल के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ग़ज़ल दुनिया की सबसे अच्छी काव्यविधा है। बीज वक्तव्य में कथाकार, आलोचक एवं कवि दूधनाथ सिंह ने कहा कि हिंदी कविता की दो स्थितियाँ हैं, कविता को जनता के धरातल पर लाया जाए या जनता को कविता के धरातल पर लाया जाए। इन दोनों स्थितियों के खतरे हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी ग़ज़ल की कोई परंपरा नहीं है परंतु प्रगतिशीलता को ग़ज़ल के रूप में बाँधकर व्यक्त करने की एक परंपरा रही है। अदम ने ग़ज़ल के फॉर्म को एक मठ में ग्रहण किया और चर्चित रचनाएँ लिखीं।

श्री विभूति नारायण राय ने कहा कि 'जनसत्ता' में छपी अदम गोंडवी की कविता से मैं काफ़ी प्रभावित हुआ था।

समारोह में प्रो. गंगाप्रसाद विमल, वरिष्ठ कथाकार डॉ. विजय मोहन सिंह, से. रा. यात्री, आवासीय लेखक ऋतुराज, प्रो. देवराज, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल, प्रो. सुरेश शर्मा, प्रकाश चंद्रायन, डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, दिनेश कुशवाह, संगोष्ठी के संयोजक डॉ. बीर पाल सिंह यादव, आदि समेत प्रतिभागी, विश्वविद्यालय के अध्यापक एवं छात्र उपस्थित थे।

पोस्टर प्रदर्शनी का उद्घाटन :

उद्घाटन समारोह के पूर्व हबीब तनवीर भवन के प्रांगण में भव्य पोस्टर प्रदर्शनी का उद्घाटन उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष उदयप्रताप सिंह द्वारा किया गया।

प्रस्तुति : बी. एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी-चेन्नई द्वारा द्वितीय अंतरराष्ट्रीय विश्व भाषा हिंदी दिवस सम्मेलन

10,11,12 जनवरी 2014 को तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा द्वितीय अंतरराष्ट्रीय विश्व भाषा हिंदी दिवस सम्मेलन का आयोजन हुआ। 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर समारोह में मुख्य अतिथि पुदुचेरी के गवर्नर श्री विरेंद्र कटारिया उपस्थित थे और ताजाकिस्तान के प्रो. हबीबुलो रजबोव और जापान की डॉ. तोमोको किकुचि आदि विदेशी हिन्दी विशेषज्ञों के साथ कई हिन्दी साहित्यकारों और विद्वानों को सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन में कुल 5 गोष्ठियाँ हुईं और साहित्यकारों के विचारों की ऊर्जा से भरपूर रहीं। चेन्नई और छत्तीसगढ़ से आए छात्र-छात्राओं ने भी इस गोष्ठी में भाग लिया।

11 जनवरी को 3 गोष्ठियों का विषय स्त्री पर केन्द्रित था। पहला सत्र था, आज की प्रगतिशील नारी का पुरुषों के प्रति नज़रिया। दूसरे सत्र में कामकाजी माताओं के बच्चों की समस्या पर विचार किया गया। अध्यक्ष डॉ. तोमोको किकुचि ने कामकाजी माताओं से संबंधित जापान के समकालीन उपन्यासों का परिचय दिया। कुछ जापानी उपन्यासों में बच्चे के नाज़ुक मन और प्यारे अस्तित्व पर प्रकाश डाला जाता है जो व्यस्त कामकाजी माताओं को प्रेरित करता है, चेतावनी भी देता है। इस प्रकार उनकी दृष्टि में परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। तीसरे सत्र में आज के संदर्भ में नारी के प्रति पुरुषों की मानसिकता पर गोष्ठी हुई।

12 जनवरी को 2 सत्र हुए, पहला सत्र 'विदेशों में हिन्दी का स्वरूप' पर केन्द्रित था। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. हबीबुलो रजबोव ने बताया कि विदेशों में हिन्दी के प्रति लोगों की रुचि किस तरह जाग रही है। अगला सत्र भाषा और तकनीक के संबंध पर था जिसका शीर्षक था 'भूमंडलीकरण एवं नई प्रौद्योगिकी और भाषाएँ'। अध्यक्ष प्रो. दिलीप सिंह ने इस बात पर बल दिया कि भाषा-परिवर्तन से ही भाषा का विकास संभव है, इसलिए तकनीक और भाषा का कोई विरोध नहीं है। सत्र के अंत में सभी प्रतिभागियों का सम्मान किया गया।

रेखा सेठी / तोमोको कीकुचि की रिपोर्ट

सूचना

'विश्व हिंदी पत्रिका 2014' के लिए आलेख आमंत्रित

सचिवालय की वार्षिक पत्रिका के 6ठे अंक के प्रकाशन का कार्य शुरू हो चुका है। विश्व भर के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों व लेखकों की ओर से शोध आलेख आमंत्रित हैं। लेख प्रकाशन संबंधित नियम व शर्तें तथा अंतिम तिथि की जानकारी आपको ईमेल द्वारा भेजी जाएँगी। अधिक जानकारी के लिए ईमेल, फ़ोन अथवा फ़ैक्स द्वारा संपर्क करें।

21 वीं शती के साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

8 मार्च 2014 को गुरुनानक खालसा कॉलेज, मुंबई के हिंदी विभाग तथा महाराष्ट्र राज्य हिंदी समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'भूमंडलीकरण : 21 वीं शती के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए 'समीक्षा' के संपादक और इग्नू के प्रोफ़ेसर डॉ. सत्यकाम ने हिंदी साहित्य की कालजयी कृतियों के हवाले से यह कहा कि 'बाज़ार हमेशा मौजूद रहा है। वह ईमानदार आदमी को खरीदता है। हिंदी में आधी रचनाएँ विरोध से आशंकित हैं। आज हमारे समक्ष केवल बाज़ार का ही संकट नहीं बल्कि साहित्य और पर्यावरण का भी संकट उपस्थित है।'

दो दिन के इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में भूमंडलीकरण और काव्य, भूमंडलीकरण और कथा-साहित्य, भूमंडलीकरण और जनसंचार तथा साहित्य की अन्य विधाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। इस चर्चा में इलाहाबाद से आए डॉ. रामकिशोर शर्मा, हैदराबाद से पधारे डॉ. ऋषभ देव शर्मा, डॉ. रतन कुमार पांडेय, डॉ. चंद्रदेव कवडे, डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, डॉ. विष्णु सर्वदे, डॉ. मधुलिका पाठक, दयानंद भुबाल, डॉ. उषा श्रीवास्तव, डॉ. उषा मिश्रा, डॉ. शीला अहुजा, भुवेंद्र त्यागी और डॉ. सूर्यबाला ने विभिन्न सत्रों में अध्यक्ष तथा विषय प्रवर्तक के रूप में अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट

पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय पत्रकारिता सम्मान समारोह

7 फ़रवरी, 2014 को गांधी भवन, भोपाल में मीडिया विमर्श द्वारा पं. बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय पत्रकारिता सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कहा "व्यंग्य कोई फनी गेम नहीं है न ही हास्य मात्र है, यह समाज की विसंगति को दिखाता है और समाज को शिक्षित भी करता है। व्यंग्य साहित्य की गंभीर विद्या है।"

कार्यक्रम में दिल्ली से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका व्यंग्य यात्रा के संपादक और देश के जाने-माने व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय को 6ठा पं. बृजलाल द्विवेदी अखिल भारतीय पत्रकारिता सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर मीडिया विमर्श की प्रकाशक भूमिका द्विवेदी एवं संजय द्विवेदी ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार डॉ. सुरेश राठौर और आभार व्यक्त मीडिया विमर्श के उपसंपादक हितेश शुक्ल ने किया। इस मौके पर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ और दिल्ली सहित देशभर से आए बुद्धिजीवी, साहित्यकार, मीडिया विशेषज्ञ सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

साभार : www.bhaskar.com

हिंदी की एकमात्र यहूदी उपन्यासकार सम्मानित

3 जनवरी, 2014 को सोसाइटी फॉर सोशल रिजेनेरेशन ऐंड इक्विटी नामक ग़ैर सरकारी संगठन ने कल्याणपुर, लखनऊ स्थित अपने कार्यालय में एक समारोह में हिंदी भाषा की एक मात्र यहूदी उपन्यासकार, शीला रोहेकर, को सम्मानित किया। वर्ष 2013 में भारतीय ज्ञानपीठ ने शीला रोहेकर का तीसरा उपन्यास 'मिस सैमुएल: एक यहूदी गाथा' प्रकाशित किया। शीला रोहेकर के इस उपन्यास के अतिरिक्त हिंदी में केवल एक ही और ऐसा उपन्यास है जो भारतीय यहूदी जीवन का चित्रण करता है। मगर वह उपन्यास आज से बावन वर्ष पूर्व 1961 में प्रकाशित हुआ था जिसे मीरा महादेवन ने लिखा था। उनकी मृत्यु के पश्चात अब शीला रोहेकर ही हिंदी की एक मात्र यहूदी उपन्यासकार हैं।

सम्मान समारोह में सोसाइटी फॉर सोशल रिजेनेरेशन ऐंड इक्विटी की अध्यक्ष शुमा तालुदार ने शीला रोहेकर को एक मेमेंटो पेश किया। इस अवसर पर एक परिचर्चा और काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

साभार: English Press

डॉ. चैतन्य प्रकाश की पुस्तक विषयांतर का लोकार्पण

27 मार्च 2014 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एनेक्सी में डॉ. चैतन्य प्रकाश की पुस्तक विषयांतर का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। ओसाका विश्वविद्यालय जापान में एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. चैतन्य प्रकाश एक मौलिक चिंतक और विचारक हैं। समसामयिक विषयों पर उनका लेखन तात्कालिकता और व्यक्तियों और घटनाओं के चर्चा करने के बजाय उनमें निहित मानवीय पहलुओं, संवेदनाओं, गहरे सरोकारों, समाज, जीवन के बदलते परिदृश्य, मूल्यों के सिकुड़न, आधुनिक संदर्भों और शाश्वत तत्वबोध को उजागर करते हैं। इसके चलते ये लेख निबंध बन गए हैं। यह पुस्तक प्रयोगधर्मी, प्रतिबद्ध और रचनात्मकता से युक्त प्रकाशन समूह संवाद मीडिया के तत्वावधान में सुमेधा बुक्स द्वारा प्रकाशित की गई है ।

प्रवासी दुनिया से साभार

डॉ. कालोजी की पुस्तक 'मेरी आवाज़' का लोकार्पण

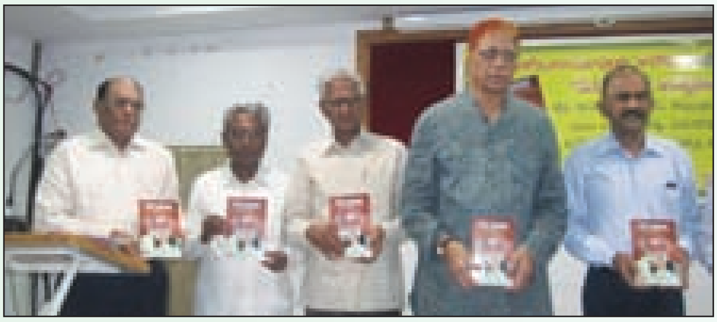

आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद के तत्वावधान में शनिवार 25 जनवरी 2014 को सुंदरय्या विज्ञान केंद्र (मिनी), बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद में तेलुगु के सुप्रसिद्ध प्रजाकवि पद्मभूषण डॉ. कालोजी नारायण राव की पुस्तक 'ना गोड़वा' के हिंदी अनुवाद 'मेरी आवाज़' का लोकार्पण डॉ. के. दिवाकराचारी (निदेशक, आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे वरंगल के फ़िल्म निर्देशक श्री बी. नरसिंग राव ने 'मेरी आवाज़' पुस्तक का लोकार्पण किया एवं अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। ऋषभदेव शर्मा जी ने ही अपनी समीक्षा भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के दौरान 'मेरी आवाज़' के अनुवादकों को भी सम्मानित किया गया। सभा का संचालन अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (इफ्लू), हैदराबाद के हिंदी एवं भारत अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एम. वेंकटेश्वर ने किया।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

ऋषभ देव शर्मा कृत 'तेलुगु साहित्य का हिंदी पाठ' का लोकार्पण

7 जनवरी 2014 चिक्कड़पल्ली स्थित श्री त्यागराय गान सभा में हिंदी कवि एवं समीक्षक प्रो. ऋषभ देव शर्मा की सद्य:प्रकाशित आलोचना 'तेलुगु साहित्य का हिन्दी पाठ' का लोकार्पण समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य डॉ. एम. वेंकटेश्वर ने कहा 'भारतीय भाषाओं में तेलुगु भाषा का भाषिक, सहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व है तथा तेलुगु साहित्य का हिंदी में बड़ी मात्रा में अनुवाद भी हो चुका है जो तेलुगु संस्कृति को निकट से जानने-समझने के लिए बहुत सहायक है।'

तेलुगु साहित्यकार प्रो. एन. गोपि ने कहा कि अन्नमाचार्य से लेकर आज तक के तेलुगु साहित्यकारों के रचनाकर्म पर हिंदी में प्रस्तुत यह समीक्षा कृति वास्तव में हिंदी और तेलुगु के मध्य एक नए स्नेह संबंध की शुरुआत है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख तेलुगु साहित्यकार डॉ. सी. भवानी देवी ने कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि उनकी यह पुस्तक हिंदी और तेलुगु दोनों भाषाओं के पाठकों के लिए तो उपयोगी है ही अनुवाद, भारतीय साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन के शोधार्थियों और अध्येताओं के लिए भी समान रूप से लाभकारी है।

साभार : Hyderabadse.blogspot.com/2014/01/blog-post_8.html

हिंदी को विश्व भाषा बनाने में मीडिया की भूमिका पर व्याख्यान

9 जनवरी 2014 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में मीडिया और हिंदी पर विशेष व्याख्यान संपन्न हुआ।

मलयालम और हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जी. गोपीनाथन ने कहा कि हिंदी विश्वभाषा है और उसे विश्वभाषा बनाने में मीडिया की बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि आधुनिक काल में सर्वप्रथम गांधी जी ने हिंदी में 'इंडियन ओपिनियन' अखबार निकालकर हिंदी की विश्व भूमिका की नींव रखी थी। बाद में मस्क्वा से लेकर जर्मन और बीबीसी रेडियो के हिंदी कार्यक्रम पूरी दुनिया में सुने जाने लगे। इसी तरह हिंदी सिनेमा भी पूरी दुनिया में देखा जाता रहा है। अब इंटरनेट हिंदी के वैश्वीकरण को नई गति दे रहा है।

प्रो. जी. गोपीनाथन ने कहा कि हिंदी विश्व संचार की भाषा है। वह जोड़नेवाली भाषा है। भक्ति साहित्य को दक्षिण से पूरे भारत में लाने का श्रेय हिंदी को ही है। अनेक अहिंदीभाषियों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अथक प्रयास किए और हिंदी की सेवा भी की। व्याख्यान के बाद वेब पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों - अंबरीन अरशद, करुणा गुप्ता, नीरु कुमारी सिंह, फातिमा कनीज़, विनय कुमार प्रसाद, अभिषेक कुमार शर्मा और अमित कुमार राय द्वारा पूछे गए प्रश्नों के जवाब भी प्रो. जी. गोपीनाथन ने दिए।

प्रो. जी. गोपीनाथन के व्याख्यान पर प्रो. के.एम. मालती, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय के एसिस्टेंट प्रो. डॉ. वेदरमण और डॉ. जय कौशल ने संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी कीं। व्याख्यान के पूर्व प्रो. जी. गोपीनाथन का सन्मार्ग के संपादक हरिराम पांडेय, दैनिक जागरण के कोलकाता संस्करण के प्रभारी रवि प्रकाश, डॉ. वेदरमण, जया तिवारी तथा आफरीन जमान द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोनी कुमारी सिंह ने किया। स्वागत भाषण कोलकाता केंद्र के प्रभारी डॉ. कृपाशंकर चौबे और धन्यवाद ज्ञापन सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

साभार : http://hindipremi.blogspot.com

श्रद्धांजलि

हिंदी के अग्रणी साहित्यकार अमरकांत का निधन

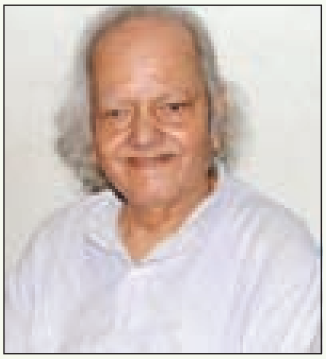

हिंदी के अग्रणी साहित्यकार अमरकांत का 17 फरवरी 2014 को इलाहाबाद में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। श्री अमरकांत ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू और व्यास सम्मान जैसे कई लब्धप्रतिष्ठ पुरस्कारों से सम्मानित थे।

अमरकांत के बेटे अरविंद बिंदु ने बीबीसी से बातचीत करते हुए कहा, ''अमरकांत की एकदम ठीक थे। उनकी मौत अचानक हुई। इससे पहले उनकी तबीयत ख़राब नहीं थी। हालांकि शारीरिक रूप से उनको थोड़ी परेशानी थी।''

हिंदी साहित्यकार असग़र वजाहत ने अमरकांत जी के निधन पर शोक जताते हुए कहा, ''अमरकांत अपनी पीढ़ी के एक ऐसे कहानीकार थे जिनसे उस समय के युवा कहानीकारों ने बहुत सीखा। वो कहानीकारों में इस रूप में विशेष माने जाएँगे कि एक पूरी पीढ़ी को उन्होंने सिखाया-बताया।''

अमरकांत जी के कथा साहित्य की चर्चा करते हुए श्री वजाहत ने कहा, ''उनकी कहानियों में हम जो संवेदना देखते हैं वो मुख्य रूप से मध्य वर्ग, निम्न मध्य वर्ग, एक वृहत्तर हिंदी समाज की संवेदना है। उन्होंने इसी को अपनी कहानियों का केंद्रिय विषय बनाया है।''

अमरकांत जी हिंदी कथा साहित्य में 'दोपहर का भोजन', 'डिप्टी कलेक्टरी', 'ज़िंदगी और जोंक' जैसी कहानियों से चर्चित हुए थे।

अमरकांत जी का जन्म वर्ष 1925 में उत्तर प्रदेश के बलिया में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। अमरकांत जी को प्रेमचंद की परंपरा का कहानीकार माना जाता रहा है। 'सूखा पत्ता', 'आकाश पक्षी', 'काले उजले दिन', 'सुन्नर पांडे की पतोहू', 'इन्हीं हथियारों से' इत्यादि उनके प्रमुख उपन्यास थे। 'इन्हीं हथियारों से' के लिए ही उन्हें वर्ष 2007 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। 'ज़िंदगी और जोंक', 'देश के लोग', 'मौत का नगर', 'एक धनी व्यक्ति का बयान', 'दुख-सुख का साथ' इत्यादि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

वर्ष 2009 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसी साल उन्हें 'व्यास सम्मान' भी दिया गया था।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से अमरकांत जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

बीबीसी हिंदी से साभार

प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी कवि व कथाकार श्री पूजानंद नेमा

मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी कवि व कथाकार पूजानंद नेमा का 13 मार्च, 2014 को देहान्त हो गया। उनका जन्म: 24.11.1943 को हुआ था।

श्री नेमा अभिमन्यु अनत के नेतृत्व में श्री रामदेव धुरन्धर के साथ वसंत पत्रिका के प्रारंभिक व ऐतिहासिक संपादकों में से थे। आपने मॉरीशस में हिंदी का प्रथम वेबसाइट/ब्लॉग का निर्माण किया था। आप 1964-1978 प्राथमिक पाठशाला के हिंदी शिक्षक रहे हैं। आपकी कई रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं जैसे 'नया सफ़र सहने का' लघु कथा संग्रह (1992); 'चुप्पी की आवाज़' कविता संग्रह (1995); 'आकाश गंगा' मॉरीशसीय हिंदी कविता-संग्रह (1972); 'परी तालाब' मॉरीशसीय लोक-कथाएँ व अन्य लघु कहानी संग्रह तथा अन्य संग्रहों में आपकी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं।

11 अप्रैल, 2014 को महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा स्वर्गीय श्री पूजानंद नेमा की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं के प्रकाशन में सह-संपादक के रूप में श्री नेमा का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

पूजानंद नेमा जी के जाने से मॉरीशसीय हिंदी साहित्य जगत को भारी क्षती हुई। विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पूजानंद नेमा जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग
सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी, श्रीमती विजया सरजु
श्रीमती उषा राम

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone: (230) 676 1196 - Fax: (230) 676 1224
Email: info@vishwahindi.com
Website: www.vishwahindi.com

Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: (230) 208 1317

विश्व पुस्तक मेले में हिंदी पर परिचर्चा 'हिंदी-आधुनिकता एक पुनर्विचार का लोकार्पण'

विश्व पुस्तक मेले 2014 में वाणी प्रकाशन व नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 19 फरवरी 2014 को आयोजित 'हिंदी महोत्सव' कार्यक्रम में 'हिंदी-आधुनिकता एक पुनर्विचार' (तीन खण्ड) पुस्तक का लोकार्पण समारोह व परिचर्चा हुई। इस परिचर्चा में सी.एस.डी.एस. के संपादक व वरिष्ठ लेखक अभय कुमार दुबे, प्रसिद्ध पत्रकार रवीश कुमार, प्रसिद्ध इतिहासकार सुधीर चंद्रा, आईआईएएस के पूर्व विदेशक पीटर रोनल्ड डिसूज़ा व इंडिया टुडे की फीचर संपादक मनीषा पांडेय का सान्निध्य रहा।

सत्र की शुरुआत में ही मनीष पांडेय ने कहा कि हिंदी समाज आधुनिकता का विरोध करता है। कहीं न कहीं इसके पीछे जातिवाद की अवधारणा है। इसके जवाब में सुधीर चंद्रा ने कहा कि हमें आधुनिकता से आक्रांत रहने वाली मानसिकता से बचना होगा। चर्चा में सभ्य आधुनिकता पर ज़ोर दिया गया। लोगों को आधुनिकता हौव्वा लगती है। हम लगातार अल्टरनेटिव आधुनिकता की बात करते हैं कि आधुनिकता का नाम लेने से ही दास्तां शुरु हो जाती है, जबकि ऐसा नहीं है। स्त्री और दलित विमर्श की बातें इसी भाषा में होती हैं।

परिचर्चा के बढ़ते क्रम में सुधीर चंद्रा ने कहा कि अपनी परंपरा का मूल्य समझे बिना कोई भी समाज उन्नति नहीं कर सकता। अभय कुमार दुबे ने हिंदी को अंग्रेज़ी से अलग बताते हुए कहा कि विमर्श इसे विविधता प्रदान करते हैं।

मनीष पांडेय ने रवीश कुमार से सवाल किया कि हम जहाँ काम करते हैं, वहाँ से अंग्रेज़ी का कॉरिडोर चार से छह फीट है, लेकिन वह दूसरी दुनिया है, जहाँ हम एलियन से लगते हैं। रवीश ने कहा कि मैं भी हिंदी के लिए बाहरी हूँ। मैंने भी इसे सीखा है। घबराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हिंदी का पाठक वर्ग अंग्रेज़ी से ज़्यादा है।

साभार : http://hindi.webdunia.com/literature-articles

संपादकीय

टके सेर भाजी, टके सेर खाजा...

(बात कड़वी लग सकती है। पद, उत्तरदायित्व, पाठकों की भावनाओं आदि के बारे में सोचते हुए इसे मॉरीशस भर की चीनी की चाशनी में घोलकर रखने के कई प्रयास किये। अनेक रूपक आज़माए, अनेक उदाहरण जोड़े-निकाले। अंततः मन नहीं माना और बोला बात बनाने से अर्थ बिगड़ सकता है। जितना कहना है उतना ही और स्पष्ट कहो। ठेस पहुँचे तो क्षमा मांगो। बात वृहद् हिंदी समाज के हित की है। महत्वपूर्ण है कि उसे समझ में आए।)

हिंदी एक बहुत लम्बी परम्परा की अनेक थातियों का वारिस है। जिस प्रकार ज्ञान, मीमांसा इसमें अपार है उसी प्रकार इसमें शोध, मूल्यांकन, लेखन, सम्मान आदि के अपने मानदण्ड भी हैं। हिंदी समुदाय के अपने घेरे में ये सभी कुछ (शुद्धता और कुछ प्रदूषण के साथ भी) चलते आए हैं, मान्य रहे हैं। परंतु जैसे-जैसे यह भाषा विश्व भाषा स्वरूप धारण कर रही है वैसे-वैसे हिंदी समाज में यह चेतना जागृत करना अनिवार्य हो गया है कि हमारे मानक और हमारे मानदण्ड ऐसे होने चाहिए जो एक विश्व भाषा को शोभा दें और विश्व (हिंदी और अहिंदी) समुदाय को स्वीकार्य हों।

आपने ध्यान दिया होगा कि हिंदी भाषा की वैश्विकता का अहसास अपने साथ बहुत सी अच्छी बातें लेकर आया है। संक्षेप में इस अहसास ने लेखकों, सेवकों, संपादकों, सम्मेलन-परिचर्चा आयोजकों के मन में यह भावना उत्पन्न की है कि अब हिंदी संबंधी लेखन, प्रकाशन, संकलन, समालोचना, शोध और मीमांसा के फलक का वैश्विक फैलाव अनिवार्य हो गया है। संकेत बहुत ही शुभ हैं।

लेकिन इसके साथ कई क्षेत्रों में अभी बहुत काम बाकी है। विज्ञान आदि विषयों में हिंदी के प्रयोग की दृष्टि से कमियों की चर्चा बहुत बार हो चुकी है ही। हिंदी अकाडीमिया का अत्यधिक साहित्य केंद्रित होना भी विचार का बिन्दु है। इन सब के बीच आज की चर्चा का केंद्र यह है कि हिंदी की वैश्विकता के अहसास ने हिंदी जगत में कुछ ऐसी प्रवृत्तियों को जन्म दिया है जो हिंदी की वैश्विक छबि अथवा सम्मान को आघात पहुँचा सकती हैं।

बात इक्के-दुक्के उदाहरणों की नहीं है। आप ही बताइये आपने इ-मेल, फेसबुक, डाक द्वारा ऐसे कितने निमंत्रण पाए होंगे जिनमें अमुक संस्था अमुक देश में अपना अमुकवाँ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित करने जा रही है जिसके लिए अमुक तरीके से अमुक पंजीकरण राशि देकर अमुक दिनों की यात्रा के लिए नामांकन भरा जा सकता है। यात्रा के अमुक खर्च में टिकट, आवास के साथ-साथ शोध आलेख पढ़ने का अवसर, प्रमाण पत्र और साथ में अमुक महानुभाव के हाथों आपको अमुक सम्मान दिया जाना शामिल है। यात्रा, आवास और भोजन सेवाएँ थोक के दामों में मिले तो 'टके सेर भाजी' लेकिन उसके साथ शोध आलेख प्रस्तुति, प्रमाण और सम्मान पत्र भी थोक के भाव मिले तो 'टके सेर खाजा!'

जबकि दूसरी ओर विश्व भाषा कहलाने वाले अथवा उस दिशा में अग्रसर बहुसंख्यक भाषाओं में हो रहे ऐसे आयोजनों में आलेख प्रस्तुति से पूर्व anonymous refereeing सम्मानों के लिए peer reviewing जैसे मानदण्डों को अनिवार्य बनाया जा रहा है वहाँ हमारे मानदण्ड (पंजीकरण राशि या प्रतिभागिता मात्र) हिंदी की वैश्विक अकादमिक विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगा सकते हैं। ऐसे प्रश्नचिह्नों से जहाँ गूगल स्कॉलर जैसे पोर्टल में उपस्थिति व अच्छे स्तर की रेफ्रीड शोध पत्रिकाओं के प्रकाशन की दृष्टि से हिंदी की निर्धनता जारी रहेगी वहीं हिंदी की अकादमिक गुणवत्ता की वैश्विक पहचान में भी देरी होगी।

बात यहाँ इस प्रकार के आयोजनों के महत्व व योगदान को नकारने की नहीं है। इनकी उपलब्धियाँ अनेक हैं। बात अकादमिक संस्कृति की है। बात केवल दूसरों के मानदण्डों या अकादमिक संस्कृति को स्वीकारने की भी नहीं है। बात है अपने मानदण्डों और संस्कृति का सम्मान करने और करवाने की।

हिंदी वैश्विक भाषा बन रही है तो स्वाभाविक रूप से हिंदी के विद्वानों की वैश्विक पहचान उभरनी चाहिए। योग्यताओं की भरमार है और अवसरों के दरवाज़े पर जमघट ज़ाहिर है। ऐसे में एक बड़ा समूह ऐसा भी है जिसको लगता है कि हिंदी से जुड़े आयोजनों आदि पर उससे भिन्न लोगों, समूहों का एकाधिकार हो गया है। ऐसे में ऊपर चर्चित 'अमुक' प्रकार वाले अनेक आयोजन हिंदी में लोकतंत्रीकरण के नाम पर भी हो रहे हैं। परंतु क्या इसके लिए ऐसे तरीके अपनाए जा रहे हैं जो भाषा की वैश्विक छबि से मेल खाते हैं?

स्वागतम्

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस

15 जनवरी, 2014 को महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल ने मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त का पद ग्रहण किया। विश्व हिंदी सचिवालय भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है। मॉरीशस में भारतीय पक्ष का नेतृत्व भारतीय उच्चायुक्त करते हैं जो विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद तथा कार्यकारिणी बोर्ड दोनों के प्रतिनिधि सदस्य भी होते हैं। विश्वास है कि महामहिम जी के आगमन से भारत और मॉरीशस के बीच ऐतिहासिक संबंध और सुदृढ़ होंगे तथा आप विश्व हिंदी सचिवालय के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से मॉरीशस में महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल का हार्दिक स्वागत है।

कई प्रश्न चुभते हैं...

उपरोक्त प्रक्रियाएँ लोकतंत्रीकरण कर रही है या अराजकता ला रही हैं? अस्पष्ट अथवा अपारदर्शी मापदण्डों पर आधारित कोई सम्मान (सम्मान के नाम भी ऐसे कि दण्डवत प्रणाम का आह्वान हो।) यदि किसी यात्रा के दौरान विदेशी भूमि पर दिया जाए तो वह अंतर्राष्ट्रीय हो जाता है? क्या केवल अंतर्राष्ट्रीय शब्द लगा देने से सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय हो जाता है?

क्या हिंदी में शोध 'गुरु वाक्य ब्रह्म वाक्य' का ही अनुसरण करते रहेंगे अथवा यहाँ भी शोध की विश्व-मान्य प्रविधियों, मानकों का अनुसरण अनिवार्य है? क्या अन्य वैश्विक भाषाओं में यह प्रवृत्ति है? (जबकि ऐसा नहीं इन सभी भाषाओं के सभी विद्वानों को अपने भाषिक समुदाय द्वारा सिर पर बिठाया जाता हो।)... और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह कि यदि हम विश्व हिंदी को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते हैं तो क्या यही उसका तरीका है और क्या उस पीढ़ी को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और सम्मानों की फेहरिस्त में रुचि होगी?

इस आभासी लोकतंत्रीकरण के विरोध पर हिंदी में एक विशेष वर्ग के निर्माण अथवा एक वर्ग की विशिष्टताओं के संरक्षण की पक्षधरता का आरोप न लगाएँ। नहीं! बात विशिष्टता की नहीं है... किसी प्रकार की पिरामिड संरचना की भी नहीं है जहाँ केवल कुछ ही लोगों को सबसे ऊपर होने का अधिकार हो। बात स्तर और मापदण्डों की है जिनके अभाव में किसी भी कार्य या प्रक्रिया की विश्वसनीयता सन्देहप्रद होती है। वस्तुतः स्थायित्व पर संकट होता है। पक्षधरता केवल वैश्विक हिंदी के स्थायित्व की है।

इस समस्या का समाधान दो महत्वपूर्ण पक्षों पर उत्तरदायित्व डालता है।

अंतर्राष्ट्रीय मंचों के आयोजकों (सरकारी और ग़ैरसरकारी) द्वारा चयन की प्रक्रिया में मानदण्डों की स्पष्टता और पारदर्शिता के माध्यम से लोकतंत्रीकरण को बढ़ावा दिया जाए। जिनको अवसर न मिले वे यह तो जान पाएँ कि उनको अगली सम्भावना आने तक और कौन-कौन से गुण अर्जित करने होंगे। प्रतिभागिता के निकष कसे जाएँ। (अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 'भेजे गए' योग्य विद्वानों का उद्घाटन सत्र अथवा अपनी प्रस्तुति के बाद से प्रमाण पत्र वितरण तक अदृश्य हो जाने के उदाहरण कम नहीं हैं)। इस बीच दूसरे पक्ष का भी उत्तरदायित्व बनता है कि वह लोकतंत्रीकरण को अराजकता में परिवर्तित होने से रोके। यहाँ भी मानदण्ड उतने ही (या अधिक) महत्वपूर्ण हैं। हिंदी जिस लंबी परंपरा का उत्तराधिकारी है उसके मूल्यों में यह भी तो है कि 'कर्तव्य को आभार की आवश्यकता और सेवा भाव में सम्मान की लालसा नहीं होती'।

जब तक इस स्थिति में सुधार नहीं आता तब तक हिंदी के प्रचार के लिए किए जा रहे कई अच्छे कामों के भी लक्ष्य अवरुद्ध होंगे। फेसबुक से लेकर पत्रिकाओं, समाचारों, इ-मेल आदि में ऐसे आयोजनों और सम्मानों की बाढ़ दिखेगी लेकिन उनके मूल्य पर प्रश्नचिह्न लगा रहेगा और आटे के साथ घुन भी पिसा जाएगा।

खाजा टके सेर नहीं मिलता!

गंगाधरसिंह सुखलाल 'गुलशन'
कार्यवाहक महासचिव